

SHRI BUDHADITYA MUKHERJEE

Shri Budhaditya Mukherjee is a renowned Sitar player, upholding the traditions of the Imdadkhani Gharana with great distinction. His name has long become synonymous with the sitar.

2. Born on December 7, 1955, Shri Mukherjee graduated in Metallurgical Engineering with a gold medal in 1977. However, even after having achieved such laurels academically, his immense love and dedication to sitar caused him to devote himself whole-heartedly to Sitar.

3. Shri Mukherjee has received his entire training in Sitar and Surbahar from his father, Late Pandit Bimalendu Mukherjee, the well known Sitarist and a doyen of the Imdadkhani Gharana of Sitar. Since then, his music has blossomed into a unique lyrical magic that reflects the "Gayaki Ang' on the Sitar with its befitting clarity. He has not only kept alive but also improved and furthered, the creative concepts of Ustad lmdad Khan. He has also immensely popularized the traditions of Imdadkhani Gharana.

4. Shri Mukherjee has enthralled all audiences alike at over 1526 concerts within India and 1278 recitals abroad in 26 countries. Since 1979, he has performed in 26 countries including the UK, USA, UAE, Canada, Australia, New Zealand, Armenia and in almost all European countries. These performances also include 12 well known International Festivals where he alone represented India. On June 30, 1990, he created history by becoming the first ever musician to perform at the House of Commons, London. He was a visiting expert in Sitar at the Conservatory of Music at Rotterdam, Holland from 1995 to 2005. Prior to that many students have benefited from his valued teachings at the lnstituto Internazionale di Studi Musicali Comparati, Venice from 1983 onwards.

5. Presently, at the age of 63, Shri Mukherjee has 46 commercial musical releases worldwide in the forms of compact discs, long playing discs and cassettes produced by various reputed music companies. He has received appreciation from late Shri Satyajit Ray on his first stage appearance in Calcutta in 1976 and two years later, late S. Balachander, Veena maestro – has also appreciated him after listening to his recital in the Akashwani Sangeet Sammelan broadcast.

6. Shri Mukherjee has received several awards and honours including Kumar Gandharva Samman by the State Government of Madhya Pradesh (1994), Sangeet Natak Akademi Award (2010) and Sangeet Maha Samman award by the West Bengal Government (2016).



श्री बुधादित्य मुखर्जी

श्री बुधादित्य मुखर्जी एक प्रसिद्ध सितार वादक हैं, जिन्होने इम्दादखानी घराना की परंपरा को महान विशिष्टता के साथ बनाए रखा है। आपका नाम सितार का पर्याय बन गया है।

2. आपका जन्म 7 दिसंबर, 1955 में हुआ था। आपने 1977 में स्वर्ण पदक के साथ धातु इंजीनियरिंग में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। तथापि, अकादमी के क्षेत्र में ऐसी ख्याति प्राप्त करने के पश्चात भी, सितार के प्रति आपका प्रगाढ़ प्रेम और समर्पण की भावना के कारण आपने स्वयं को सितार के प्रति पूरे मन से समर्पित कर दिया।

3. आपने सितार और सुरबहार में समग्र प्रशिक्षण आपके पिताजी, स्व. पंडित बिमलेंदु मुखर्जी, सुप्रसिद्ध सितार वादक तथा सितार के इम्दादखानी घराने के वरिष्ठ सदस्य से प्राप्त किया। तब से, आपका संगीत एक विशिष्ट गायनात्मक आकर्षण के रूप में फला-फूला जो अपनी सटीक स्पष्टता के साथ सितार पर 'गायकी-अंग' को दर्शाता है। आपने उस्ताद इम्दाद खान की रचनात्मक अवधारणा का न केवल अस्तित्व बनाए रखा बल्कि उसे बेहतर बना कर आगे बढ़ाया। आपने इम्दादखानी घराने की पंरपराओं को अत्यधिक लोकप्रिय भी बनाया।

4. आपने ने भारत में 1526 से अधिक संगीत समारोहों में तथा 26 देशों में हुई 1278 गायन प्रस्तुतियों में सभी श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया है। 1979 से लेकर अब तक आप 26 देशों में अपनी प्रस्तुति दे चुके हैं जिनमें यू.के, यू.एस.ए, यू.ए.ई, कनाडा, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड, आर्मीनिया और लगभग सभी यूरोपियन देश शामिल हैं। इन प्रस्तुतियों में 12 सुप्रसिद्ध अंतर्राष्ट्रीय उत्सव भी शामिल हैं जहां आपने अकेले भारत का प्रतिनिधित्व किया। 30 जून, 1990 को हाउस ऑफ कामन्स, लंदन में प्रस्तुति देने वाले पहले संगीतज्ञ बनकर आपने इतिहास रच दिया। आप 1995 से 2005 तक रॉटरडैम, हॉलैंड में संगीत विद्यालय में सितार के अतिथि विशेषज्ञ रहे। इससे पहले, कई छात्रों ने 1983 से इंस्टीट्यूटो इंटेरजियोनेल डी स्टडी म्यूज़िकल काम्पराटी, वेनिस में आपकी बहुमूल्य तालीम से लाभ उठाया है।

5. आज, 63 वर्ष की उम्र में, आपके पास विभिन्न प्रतिष्ठित संगीत कंपनियों द्वारा निर्मित कॉम्पैक्ट डिस्क, लांग प्लेइंग डिस्क और कैसेट के रूप में विश्व प्रसिद्ध 46 व्यावसायिक संगीत रिलीज़ है। 1976 में कोलकाता में आपकी पहली स्टेज प्रस्तुति पर आपको दिवंगत श्री सत्यजीत रे से सराहना मिली तथा इसके दो वर्ष पश्चात्, आकाशवाणी संगीत सम्मलेन प्रसारण में आपके गायन को सुनने के पश्चात दिवंगत एस.बालाचन्द्रन, वीणा विशेषज्ञ ने भी आपकी सराहना की।

6. आपको मध्यप्रदेश राज्य सरकार द्वारा कुमार गंधर्व सम्मान (1994), संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार (2010) तथा पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा संगीत महा सम्मान पुरस्कार (2016) सहित कई पुरस्कार तथा सम्मान प्राप्त हुए हैं।